# केंचुए का जीवन



जॉन हिमेलमैन

# केंचुए का जीवन



जॉन हिमेलमैन

# केंचुआ

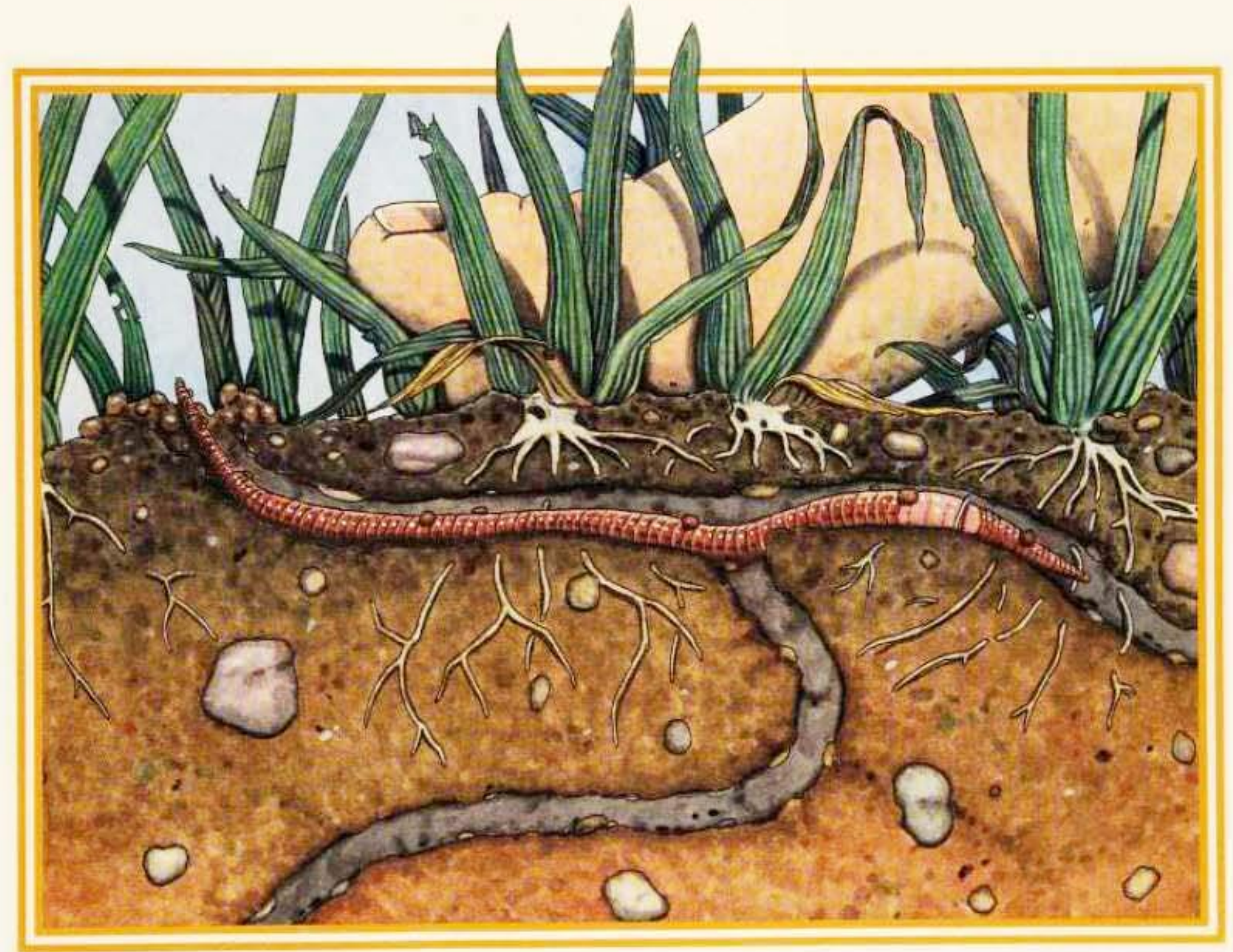
*(मिम्बिकस टेरास्ट्रिस)*

केंचुए अपना अधिकांश जीवन ज़मीन के अंदर बिताते हैं. वे मिट्टी के अंदर सुरंग बनाते हैं. वे मिट्टी में से गुज़रते हुए उसे खाते हैं. वे मरे पत्ते भी खाते हैं.

पत्ते और मिट्टी खाने के बाद, केंचुए अपनी सुरंग के प्रवेश द्वार के पास अपशिष्ट पदार्थों को छोटे-छोटे ढेरों में छोड़ देते हैं. इन ढेरों को "कास्टिंग" कहा जाता है. कास्टिंग में बहुत सारे पोषक तत्व होते हैं और उससे पौधों को बढ़ने में मदद मिलती है. मिट्टी में स्थित केंचुओं की सुरंगों में से हवा बह सकती हैं, इसलिए किसान और माली केंचुओं को पाकर खुश होते हैं और उन्हें अपना दोस्त मानते हैं.

क्या आपने कभी भारी बारिश के बाद सड़क या फुटपाथ पर केंचुओं को देखा है? बारिश में उनकी सुरंगों में पानी भर जाता है और वो नया घर खोजने के लिए किसी सूखी जगह की तलाश कर रहे होते हैं.

नर केंचुआ या मादा केंचुआ जैसी कोई चीज नहीं होती है. प्रत्येक केंचुआ उभयलिंगी (यानि द्विलिंगी, HERMAPHRODITE) होता है. वो कभी नर तो कभी मादा की तरह काम करता है. सभी केंचुए अंडे दे सकते हैं.



एक केंचुआ अपना अधिकांश जीवन हमारे पैरों के नीचे की मिट्टी में छिपकर बिताता है.



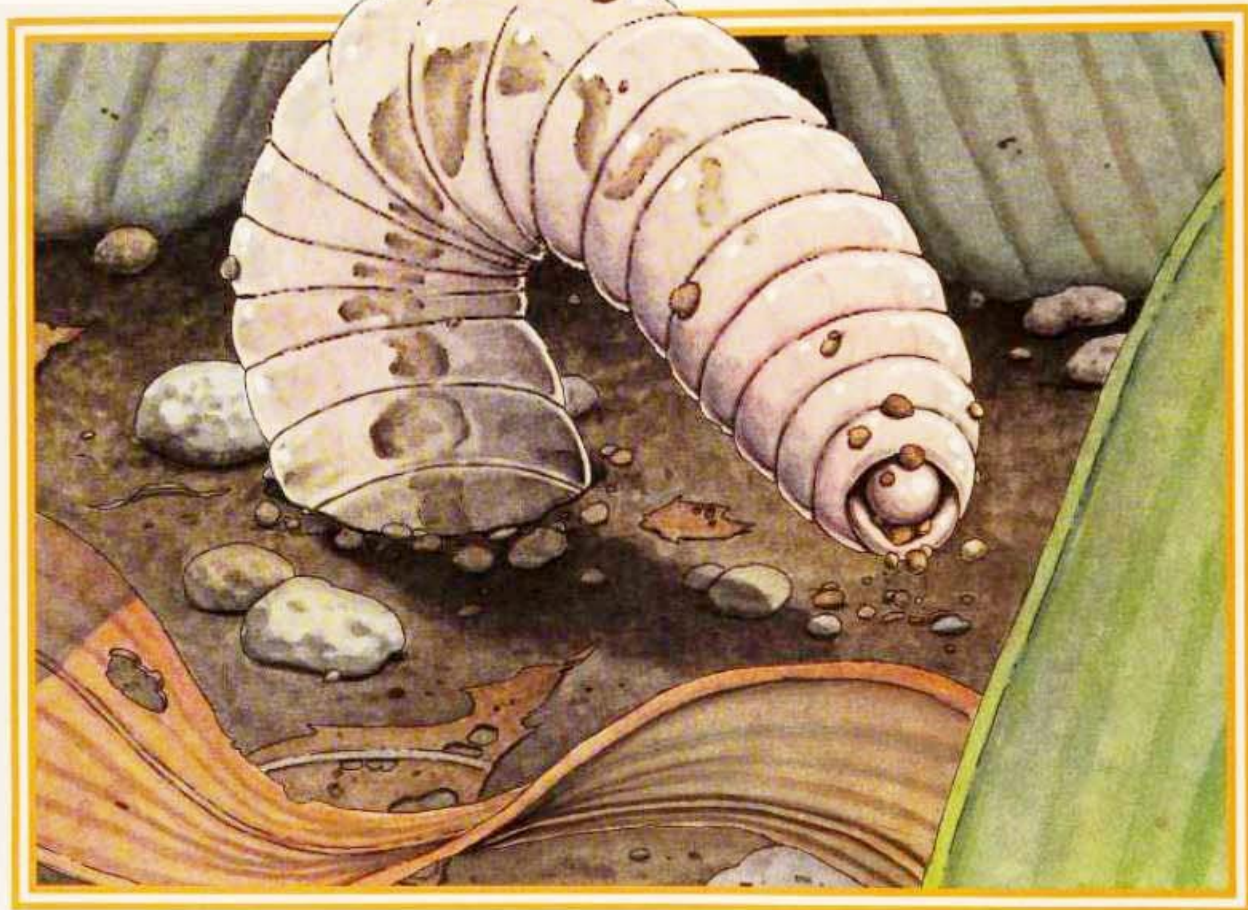
वसंत में, एक वयस्क केंचुआ अपने अंडे को एक भूमिगत बिल में छोड़ देता है.

दो महीने बाद, केंचुए का बच्चा अपने अंडे से बाहर निकलता है.
वो अंडे के खोल से बाहर रेंगता है.



युवा केंचुआ, मिट्टी में से सुरंग बनाता है.

रात के समय वो मरे पत्तों को खाता है.



कभी-कभी केंचुए मिट्टी भी खाते हैं.



मिट्टी, केंचुए के शरीर में से होकर गुजरती है. वो छोटी गोल गेंदों के ढेर के रूप में अपशिष्ट जैसे बाहर निकलती है. उन्हें "कास्टिंग" कहते हैं.



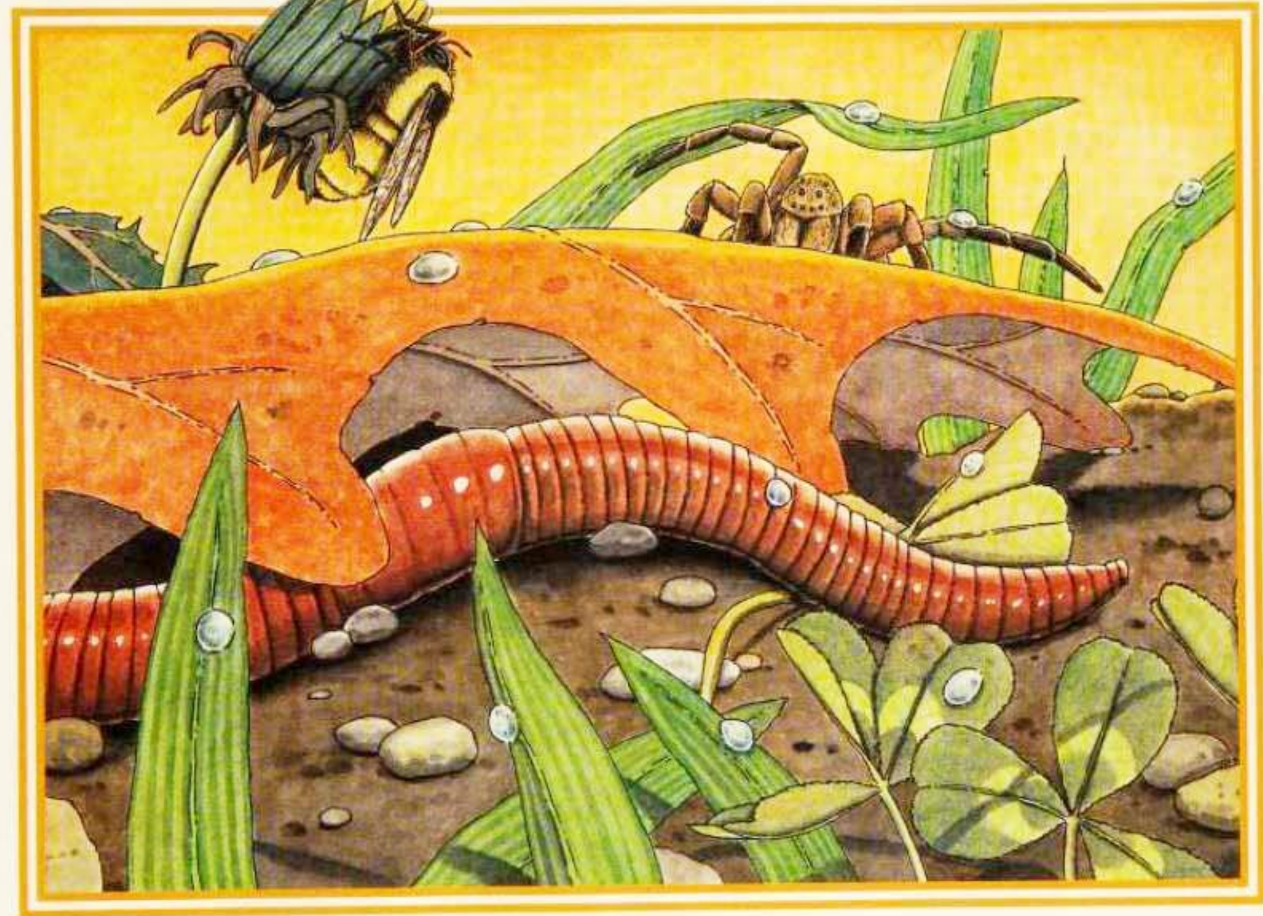
पतझड़ आने तक केंचुआ लगभग पूर्ण विकसित हो जाता है.

वो मरे पौधों को अपने सुरंगनुमा बिल में खींचता है.

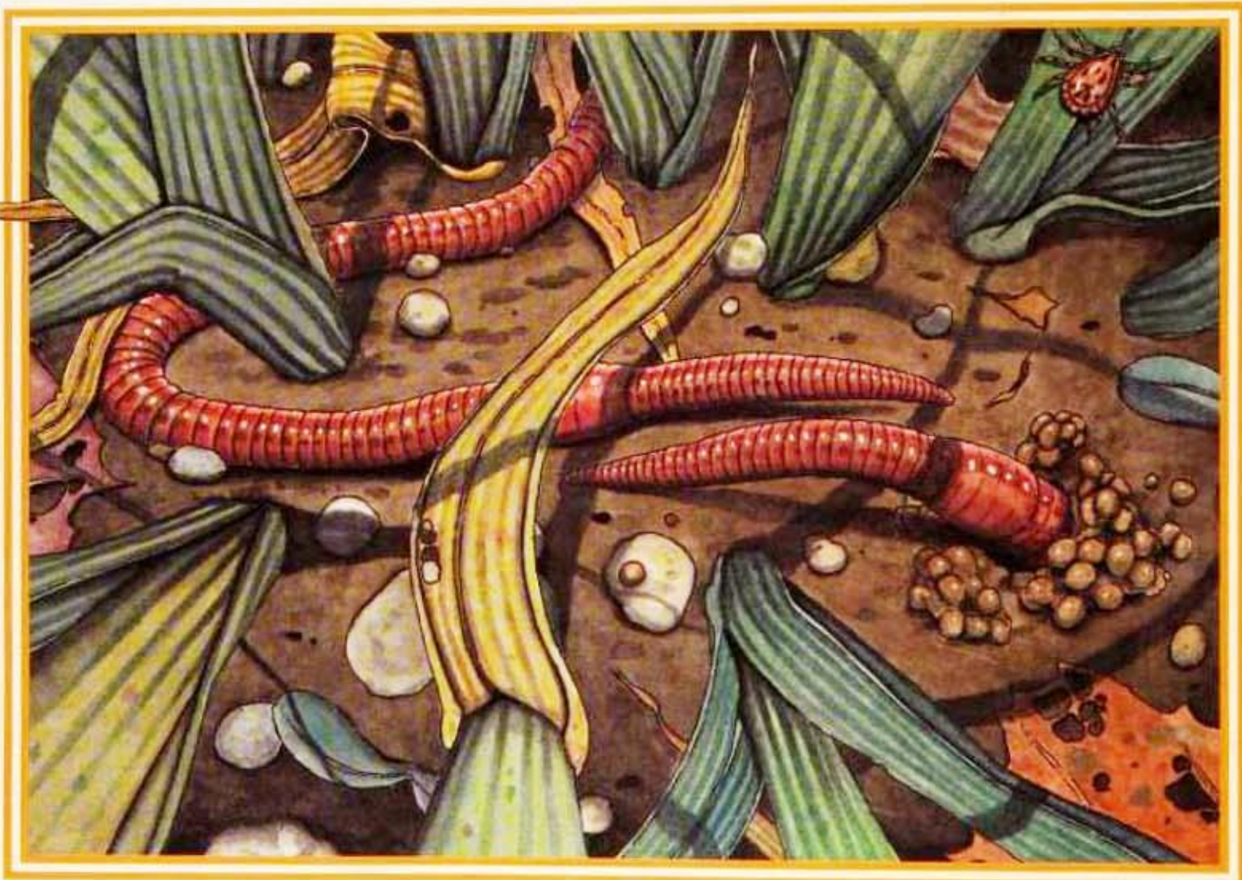
केंचुए सर्दियों तक पौधे खाते रहते हैं. उसके बाद सोने का समय आ जाता है.

बसंत की बारिश, केंचुए को वापस सतह पर लाती है.

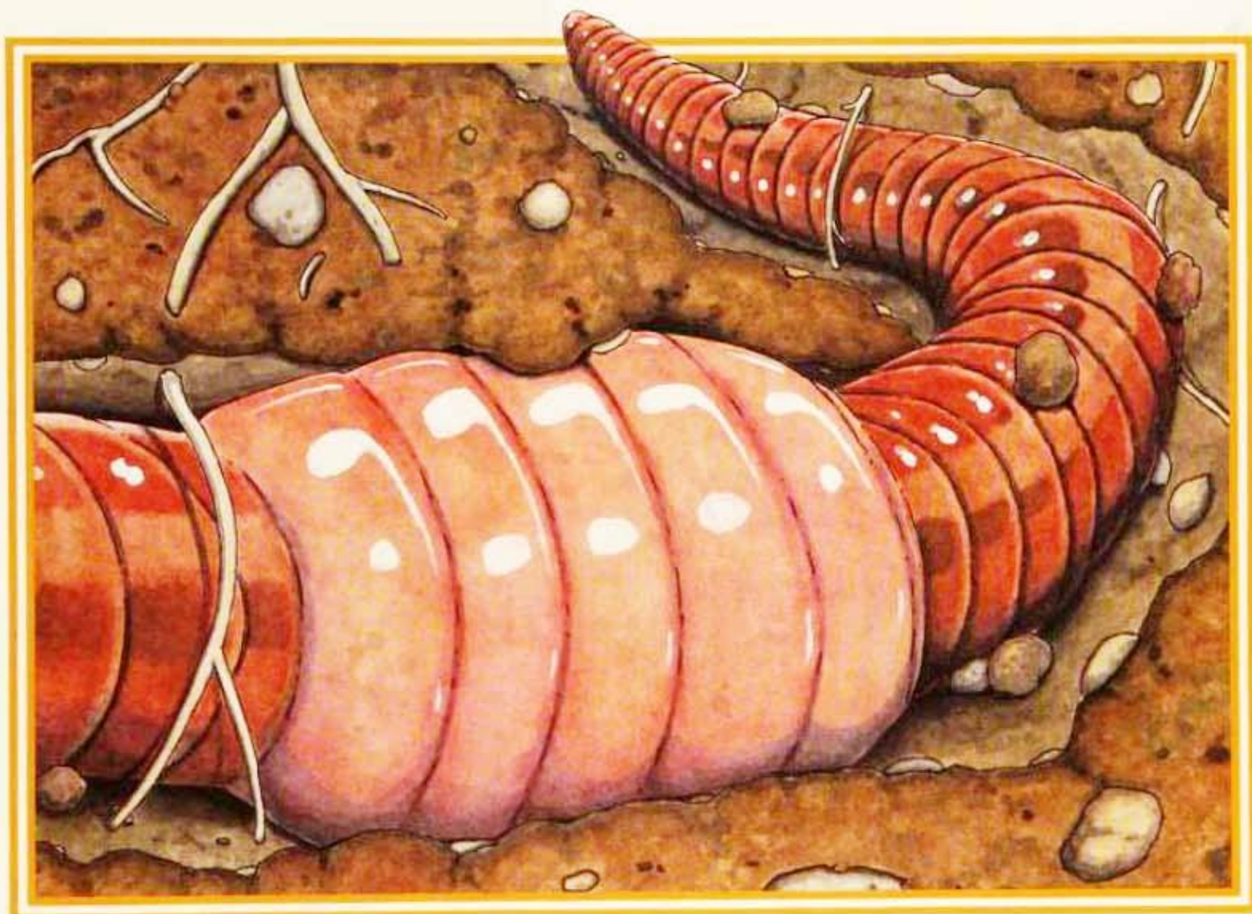
जब भूखा छछूंदर केंचुए के बिल के पास आता है
तो केंचुआ जल्दी से छिप जाता है



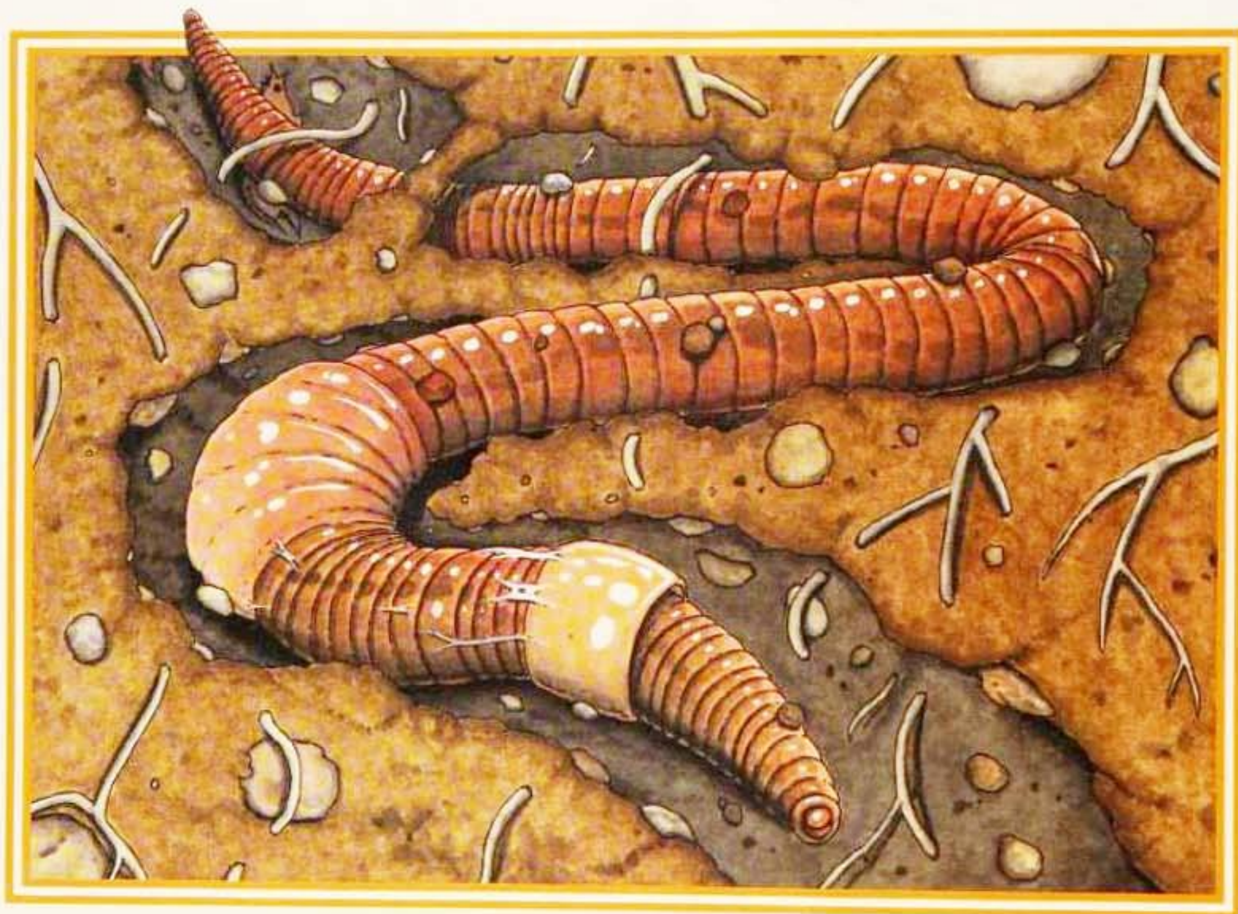
फिर केंचुआ अपने लिए एक साथी की तलाश करने निकलता है.



उसे अपना साथी बिल के बाहर ही मिल जाता है.



जल्द ही, केंचुए के शरीर का एक हिस्सा अंडों से फूल जाता है.



अंडों से भरी अंगूठी ढीली हो जाती है.
और फिर केंचुआ उसमें से फिसलकर निकल जाता है.



अंगूठी अंडों का खोल बन जाती है. केंचुआ उसे पीछे छोड़ देता है.

जब केंचुआ जमीन की ऊपरी सतह पर आता है,
तो एक रॉबिन पक्षी उसे पकड़ लेता है!



लेकिन रॉबिन पक्षी को केंचुए को अपनी सुरंग से
बाहर खींचने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है.



पर केंचुआ भी काफी ताकतवर होता है. अंत में रॉबिन उसे छोड़ देता है.



एक गर्मी की रात को आसमान से तेज़ बारिश होती है.

सुबह होते-होते केंचुए के बिल में पानी भर जाता है.

फिर केंचुआ किसी सूखी जगह की तलाश करता है.
लेकिन वो बास्केटबॉल के मैदान में फंस जाता है.

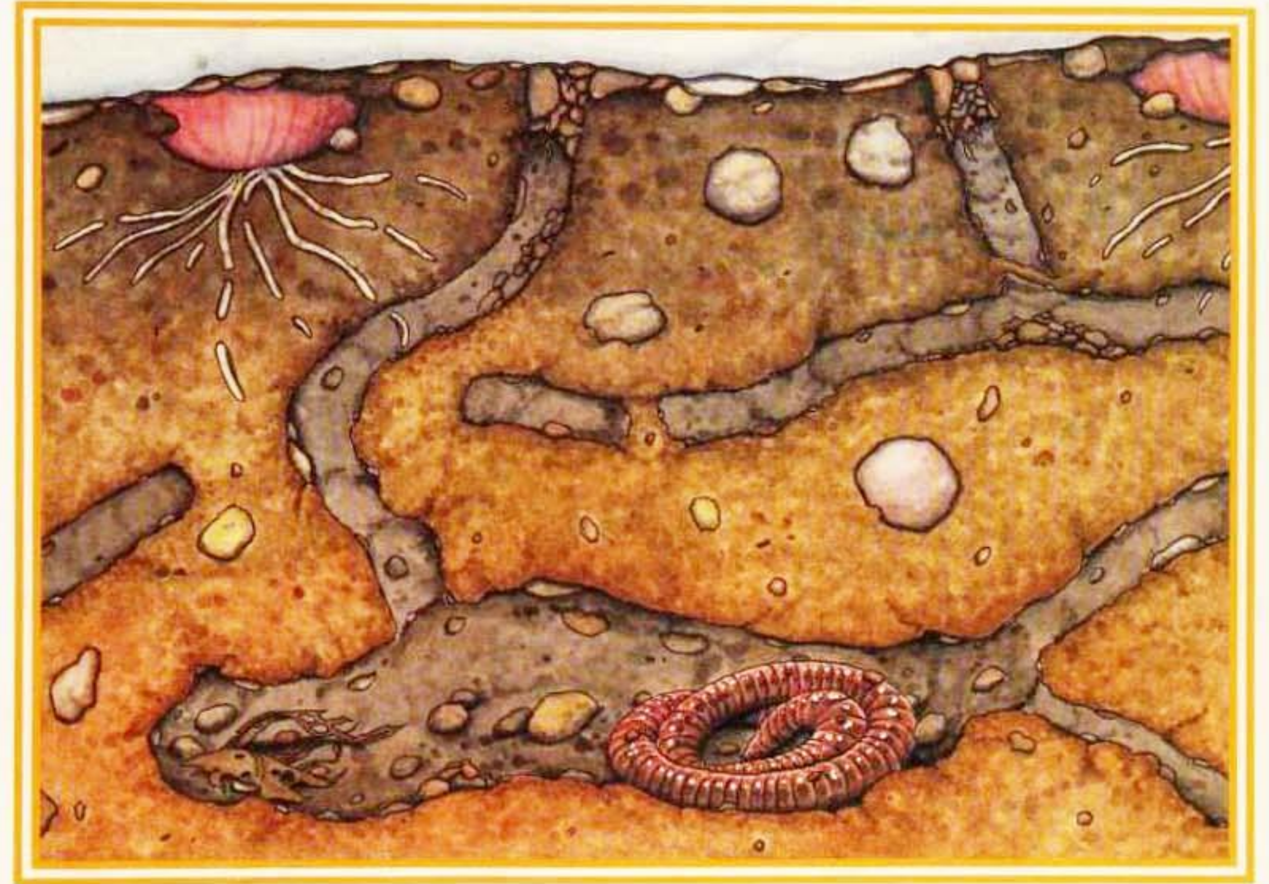


तब एक छोटा लड़का उस केंचुए को उठाता है.

और वो उसे बगीचे में रख देता है.



केंचुआ गर्मियों का बाकी समय जड़ों के बीच सुरंग बनाने
और मिट्टी खाने में बिताता है.



जब ठंड का मौसम लौटता है, तो केंचुआ दुबारा मिट्टी के अंदर जाकर सो जाता है.



वसंत ऋतु में, केंचुआ अपनी एक नई यात्रा शुरू करता है.

समाप्त